समय के सवाल और बनारस के जुलाहे

डॉमनीषकुमार मिश्रा .

प्रभारी - हिंदी विभाग, केअग्रवाल महाविद्यालय.एम., कल्याण (पश्चिम), महाराष्ट्र ।

ई मेल :manishmuntazir@gmail.com

मार्क ट्वेन) Mark Twain ने लिखा है कि बनारस इतिहास से भी पुराना है । (इतिहास और परंपरा दोनों ही दृष्टियों से विश्व की प्राचीनतम नागरियों में से एक है काशी । अर्ध चंद्राकार रूप मेंगंगा किनारे बसा हुआ यह शहर महाश्मशान है तो आनंदवन भी । माँ अन्नपूर्णा और संकटमोचन हनुमान जी यहीं हैं । अक्खड़ झक्कड़ स्वभाव बनारसियों को-फक्कड़- विरासत में मिला है । यह बाबा भोलेनाथ की नगरी है । बुद्ध की उपदेश स्थली है । कई तीर्थंकरों की जन्मस्थली है । कबीर,रैदास और तुलसीदास इसी काशी में रहे हैं । प्रेमचंद,जयशंकर प्रसाद,भारतेन्दु,आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ,आचार्य हज़ारीप्रसाद और शिवप्रसाद सिंह जी जैसे साहित्यकार इसी काशी में रहे । इसी काशी का नाम बनारसी वस्त्र उद्योग के लिये भी सदियों से जाना गया ।

बनारसी साड़ियों एवं वस्त्र उद्योग का उल्लेख से मिलता है । इसके रेशम .पू.ई 600 -वीं12 उद्योग की चर्चा14वीं शताब्दी में होने लगी थी । मुगलों और पर्सिअन संस्कृति का इसपर तगड़ा प्रभाव पड़ा । वीं शताब्दी तक बनारसी साड़ियों का खूब नाम हो गया । बुनकरों20 के लिए " जुलाहा"शब्द प्रचलित रहा है जिसका अँग्रेजी में अर्थ होगा - Ignorant Class । इनके मूल निवास के बारे में लिखित प्रमाण नहीं है लेकिन ये अपने आप को अरब से स्थानांतरित मानते हैं और अब अपने आप को " अंसारी अंसार / " कहलवाना पसंद करते हैं । प्रो मुहम्मद . तोहा 'बनारस के जुलाहे' नामक अपने लेख में मानते हैं कि के आस पास मुसलमान .ई 1092 काशी आए । उनका काशी आगमन बहराइच के गाजी सालार मसूद की सैन्य टुकड़ी के रूप में हुआ जो काशी के तत्कालीन राजा से लड़ने के लिए मलिक अफ़जल अलवी के नेतृत्व में आए थे । इस लड़ाई में हारने के बाद इन मुसलमानों ने काशी के पास ही रहने की अनुमति मांगी । अपनी आजीविका चलाने के लिए इन्होंने काशी में प्रचलित वस्त्र व्यवसाय को अपनाया । आजीविका के लिए वस्त्र व्यवसाय को चुनने के पीछे एक प्रमुख कारण यह था कि इन मुसलमानों में कई ऐसे थे जो ईरान ,अफगानिस्तान और मध्य एशिया से थे और वस्त्र व्यवसाय

E-ISSN: 2454-342x

उनका परंपरागत कार्य था ।आज बनारस के बुनकरों की संख्या लाख के करीब है । घर में 05 मास्टर /करघा रखकर या कोठीदार के यहाँ जाकर ये बुनकर काम करते है ।

सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्योग विभाग , भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार जौनपुर,गाजीपुर,चंदौली,मिर्जापुर और संत रविदास नगर जिलों की सीमाओं से बनारस जुड़ा हुआ है । इसका क्षेत्रफल 31 स्क्वायर किलो मीटर तथा आबादी 1535. लाख है । यहाँ आबादी का 48 घनत्व बहुत अधिक है । इस बात को आंकड़े में इसतरह समझिये कि बनारस में प्रति स्क्वायर व्यक्ति हैं ज 2063 किलो मीटर मेंबकि पूरे राज्य का औसत प्रति स्क्वायर किलो मीटर 689 वाराणसी - का है । बनारस में मुख्य रूप से तीन तहसील हैं,पिंडरा और राजतालाब जिनमें ब्लाक 08 के क़रीब गाँव हैं । 1327,702 ग्राम पंचायत और की 2011 विधानसभा क्षेत्र हैं । 08 19 जनगणना के अनुसार यहाँ की पुरुष आबादी,28,641 और महिला आबादी 17,53,553 है । इस क्षेत्र में किलोमीटर रेल मार्ग 122, नेशनल हाइवे -100 किलोमीटर, और 2012- तक 2013 30,50,000 मोबाइल कनेकशन थे । 2012- तक के आकड़ों के अनुसार ही यहाँ ऐलोपैथिक 13 - अस्पताल202, आयुर्वेदिक अस्पताल -26, यूनानी अस्पताल -01,कम्यूनिटी हेल्थ सेंटर - 08,प्राइमरी हेल्थ सेंटर -30 और प्राइवेट हास्पिटल -70 हैं । बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से जुड़ा नवनिर्मित ट्रामा सेंटर शायद देश का सबसे बड़ा सेंटर हो जिसका कार्य अभी हो रहा है । यहाँ प्राइमरी स्कूल -1851, मिडल स्कूल -989, सीनियर और सीनियर सेकंडरी स्कूल -409 तथा महाविद्यालय -21 हैं ।

बनारस वाराणसी / काशी / / इत्यादि नामों से जानी जाने वाली भगवान भोलेनाथ की यह नगरी इन दिनों देश के प्रधानमंत्री प्रधानसेवक श्री नरेंद्र मोदी जी के अपने संसदीय क्षेत्र के / नाते भी चर्चा के केंद्र में है । हर हर महादेव के नारे से सदा गुंजायमान रहनेवाला यह नगर पिछले लोकसभा चुनाव में हर हर मोदी,घर घर मोदी के नये नारे के साथ भारत की तस्वीर और तक़दीर बदलने की प्रतिबद्धता का मुख्य केंद्र रहा । परिणाम स्वरूप स्वयं काशी के कायाकल्प को निखारने और सवारने की कोशिशें तेज हो गयी हैं । क्योटो बनने का काशी का नया सपना है । गंगा की सफ़ाई, घाटों की सफ़ाई,मेट्रो, रिंग रूट इत्यादि के साथ साथ बनारस के बुनकरों - घोषणाएँ सामने हैं । इन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष में -आयोजन - के लिये भी कई योजनाएँ बनारस के बुनकरों की वर्तमान स्थिति को समझने का प्रयास इस शोधपत्र के माध्यम से कर रहा हूँ ।

अपने असंगठित क्षेत्र के विस्तार और इसके महत्व की दृष्टि से भारत दुनियाँ में अनोखी अर्थव्यवस्था वाला देश है । असंगठित से अभिप्राय उस विशाल व्यवस्था की कार्यप्रणाली से है जो सरकारी रूप से पंजीकृत नही है । इस के परिचालन में परोक्ष रूप से सरकार का कोई नियम लागू नहीं होता । एक अनुमान के हिसाब से भारत देश के 92.5% लोगों की आजीविका अपंजीकृत है जो देश के सकल घरेलू उत्पाद)GDP) में दो तिहाई का योगदान करती है ।

अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संघ)ILO) आमतौर से गरिमाहीन कार्यों की श्रेणी में इसे रखता है । इसका नियमन समाज करता है न की सरकार । जिस तरह आज़ का कॉर्पोरेट वर्ड अपने प्रबंधन की तारीफ़ें लूटता, कॉर्पोरेट कल्चर जैसी नई प्रणाली का हल्ला मचाया जाता है, उसी कॉर्पोरेट वर्ड का 80 से 40% श्रम कार्य असंगठित है इसपर चर्चा नहीं होती ।

वर्तमान सरकार कई योजनाओं पर काम कर रही है । उन्हीं में से एक योजना है - जन योजना । इस योजना से बुनकरों का सीधा न सही पर संबंध ज़रूर है । - प्रधानमंत्री धन 24 की जनगणना के अनुसार देश के 2011.14 करोड़ परिवारों में सिर्फ 67.) करोड़ 48 58.69 परिवारों (%के पास ही बैंकिंग सुविधा उपलब्ध है । प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा प्रधानमंत्री जन करोड़ लोगों के 7 धन योजना शुरू की गयी और आकड़ों के अनुसार अभी तक- 5 तक लगभग 2014 बैंक खाते खोले गए हैं । इस योजना के तहत नवंबर,400 करोड़ रूपये बंकों में जमा किये गए । जब कि एक सच्चाई यह भी है कि इस योजना के तहत खुले खातों में से 74% खाते के साथ पाये गए । यह जानकारी "ज़ीरो बैलेंस"RTI के द्वारा दी गयी जिसे टाइम्स ऑफ इंडिया, वाराणसी अखबार ने नवंबर को छापा । यह भी एक बड़ी महत्वपूर्ण 19 और महत्वाकांक्षी योजना है । बिचौलियों से बचाकर सीधे लाभ पहुंचाने की भावी योजनाओं का जब भी विस्तार और कार्यान्वयन होगा उस समय यह योजना बड़ी सहायक सिद्ध होगी । बुनकरों को सीधे लाभ पहुंचाने के क्रम में भी यह सहायक हो सकती है ।

भारत में हथकरघा की संख्या लाख के करीब मानी जाती है । बुनकरों और इस 38 व्यवसाय से सम्बद्ध श्रमिकों की संख्या 43. लाख के करीब आंकी जाती है । पूर्वोत्तर क्षेत्र में 32 15 लूमों की संख्या. लाख के करीब है । पूर्वी उत्तर प्रदेश अपने हथकरघा उद्योग के लिए 50 जाता रहा है ।हथकरघा बनारस की प्राचीनतम कारीगरी है । प्रधानमंत्री श्री न-जानारेंद्र मोदी जी की पहल पर हाल ही में बनारस के बडालालपुरा में करीब स्कायर 170400 एकड़ भूभाग पर 08 करोड़ रुपये की लागत से बनना सुनिश्चित हुआ है । 500 फिट में व्यापार सुविधा सेवा केंद्र यहाँ के लाखों लोग इस व्यवसाय से जुड़े हैं । इस योजना के आते ही बदलालपुरा इलाके के लगभग किलोमीटर की परिधि में ज़मीनों के भाव आसमान छूने लगे हैं । किसान और 03 स्थानीय लोग खुश हैं । उनकी आखों में भविष्य के सुनहरे सपने हैं जो विकास,रोजगार,सम्मान और प्रगति से जुड़े हैं । बरेली ,लखनऊ,सूरत,कच्छ,भागलपुर और मैसूर में भी इसी तर्ज पर व्यावसायिक केन्द्रों के गठन की मंजूरी केंद्रीय बजट में पहले ही दी जा चुकी है ।

एशियन ह्यूमन राइट कमीशन की के रिपोर्ट में यह बताया जा चुका है कि बुनकर 2007).बी. और उनके परिवार टीTuberculosis) की बीमारी से मर रहे हैं । आर्थिक विपन्नता में ये रिक्शा खीचने,नाव चलाने जैसे कार्य करने लगते हैं जिससे इनका बीमार शरीर और बीमार हो जाता है । ये या तो इलाज में लापरवाही दिखाते हैं या फ़िर आर्थिक तंगी की वजह से इलाज़ करवाते ही नहीं ।Designated Microscopy Centre)DMC) वाराणसी जिले के ब्लाक में 08

से प्रदान कर रहे हैं 2007 अपनी सुविधालेकिन इसकी जानकारी आज़ भी कई बुनकरों को नहीं है । Revised National Tuberculosis Control Programme बड़े व्यापक स्तर पर शुरू किया गया था और इसका लोगों को लाभ भी मिला । लेकिन बीमार बुनकर के इलाज़ से उसके परिवार की जरूरतें नहीं पूरी हुई । उनका जीवन संघर्ष यथावत रहा । समय- समय पर सरकारी-

गैर सरकारी संगठनों द्वारा सरकारी योजनाओं की जानकारी बुनकरों तक पहुंचाई जाती है जिसका लाभ बुनकर उठा सकते हैं ।

बहुत सारी रिटेल चैन चलाने वाली कंपनियाँ इधर बुनकरों की सहायता के लिए आगे आयी हैं । इन्होने नियमित रूप से ख़रीदारी के कुछ अनुबंध बुनकरों के साथ किये हैं । इन कंपनियों में बिग बाजार , फैब इंडिया , केलिको, पैंटलून इत्यादि हैं । Entrepreneurship Development Institute Of India (EDI) इस तरह के औद्योगिक करार में सहायता कर रहा है । पूर्व प्रधानमंत्री माननीय मनमोहन सिंह जी ने क 1000रोड़ की धन राशि बुनकरों के लिए सस्ती ब्याज दरों पर कर्ज़ के लिये उपलब्ध कराई थी । 25,000 तक के कर्ज़ वो बिना किसी गारंटी के ले सकते थे । वर्तमान सरकार भी बुनकरों के विकास के लिये गंभीर दिखाई पड़ रही है । माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं बनारस से सांसद हैं तो लोगों को उनसे उम्मीद भी अधिक है ।

बनारस के 90% से भी अधिक बुनकर मुस्लिम समुदाय से हैं । शेष अन्य पिछड़ा वर्ग या फ़िर दलित हैं । इन बुनकरों की कुल आबादी लगभग लाख के आसपास मानी जाती 5 लेकिन कोई अधिकृत सूचना इस संदर्भ में मुझे नहीं मिली है । अलईपुरा,मदनपुरा,जैतपुरा,रेवड़ी तालाब,लल्लापुरा,सरैया,बजरडीहा और लोहता के इलाकों में बुनकर आबादी अधिक है । सरकारी दस्तावेज़ों में ये मोमिन अंसार नाम से दर्ज हैं । अधिकांश रूप से ये सुन्नी संप्रदाय के हैं । इनके अंदर भी कई वर्ग हैं । जैसे कि बरेलवी , अहले अजीज, देवबंदी इत्यादि । इनकी अपनी जात पंचायत व्यवस्था भी है । सँकरे घर , आश्रित बड़े परिवार, आर्थिक तंगी और गिरते स्वास्थ के बीच Bronchitis, Tuberculosis,Visual Complications, Arthritis, के साथ साथ दमा की बीमारी बुनकरों में आम है । पिछले कुछ सालों में एड्स जैसी बीमारी से ग्रस्त मरीज़ भी मिले हैं । कम उम्र में शादी , बड़ा परिवार ,धार्मिक मान्यताएं, पुरानी शिक्षा पद्धति जैसी कई बातें इनकी दिक्कतों के मूल में हैं । PVCHR नामक संस्था ने अपने अध्ययन में पाया है कि 2002 से अधिक है । इधर इनकी आर्थिक 175 से अब तक की बुनकर आत्महत्याओं की संख्या दुर्दशा के जो प्रमुख कारण रहे हैं, वे निम्नलिखित हैं

- नये धागे
- आधुनिक मशीने
- सरकारी अनुदान अभाव
- तकनीकी सुविधा

- बदलता फ़ैशन
- अधिक लागत कम मुनाफ़ा
- कच्चे माल की कमी
- चीन,ढाका एवं दक्षिण भारत के रेशम व्यवसाय से प्रतिस्पर्धा
- बिचौलियों की मुनाफ़ाखोरी
- सरकारी योजनाओं की जानकारी न होना
- सरकारी भ्रष्टाचार
- आधुनिकता से दूरी
- धार्मिक मान्यताएं विश्वास /परम्पराएँ/
- बाजार का बदलता स्वरूप
- कम मासिक आय
- आश्रित बड़ा परिवार
- आधुनिक शिक्षा पद्धति से दूरी
- सरकारी बदलती नीतियाँ

आँकड़े बताते हैं कि सन से बनारसी साड़ियों की माँग कम होनी शुरू हुई । वैश्विक 1990 उदारीकरण, मुक्त व्यापार संबंधी समझौते, सरकारी नीतियाँ, फ़ैशन में बदलाव, भारतीय फिल्मों द्वारा बनारसी साड़ी की जगह विवाह इत्यादि में लहंगा चोली में नायिका को दिखाना और - साड़ियों के अतिरिक्त अन्य उत्पादों से न जुड़ पाना वे प्रमुख कारण हैं जिनसे इस उद्योग को तक तत्कालीन दे 1998से सन 1995हानि हुई । सनवेगौड़ा सरकार ने घरेलू रेशम उद्योग को बढ़ावा देने के लिए चीन से आनेवाले सिल्क के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया । लेकिन इसका परिणाम बनारसी साड़ी उद्योग पर उल्टा हुआ । अब यहाँ के व्यापारी बैंगलुरु बैंगलोर सिल्क / का उपयोग करने लगे जिसकी क़ीमत अधिक थी, तो साड़ियों के मूल्य भी बढ़ गये । दूसरी तरफ प्रतिबंधित चीनी सिल्क की स्म्गलिंग होने लगी और व्यापारी स्थानीय बुनकरों से उसी सिल्क पर काम करा के बनारसी साड़ियों को ही के नाम से बाजार में बेचने “मेड इन चाइना ” लगे जिनकी क़ीमत वास्तविक बनारसी साड़ियों के मुक़ाबले काफ़ी कम थी । यहकाम और बड़े पैमाने पर के बाद शुरू हुआ जब सरकार ने 1999 Chines Plain CrepeFabrics के आयात की अनुमति दे दी । ये सिल्क 01- 1. डालर में प्रति मीटर पड़ता था । जब की भारतीय 25 2 सिल्क. 5- 2001 डालर प्रति मीटर पड़ता । यही कारण भी रहा की 04- के बीच चीनी 2005 सिल्क का आयात 6500% बढ़ गया । हालांकि इधर इसके आयात में कमी आयी है लेकिन बनारसी साड़ियों का बाजार बिगाड़ने का खेल बदस्तूर जारी है ।

गुजरात के सूरत में 900,000 पावरलूम हैं । ये बनारसी साड़ियों के प्रिंट नकल बनाते हैं / और बनारसी साड़ियों की क़ीमत की तुलना में बहुत सस्ती साड़ियाँ बाज़ार में उपलब्ध करा देते हैं । बनारसी पैटर्न की साड़ी बनारसी साड़ी नहीं है, इसे समझना होगा । इससे भी बनारसी साड़ी उद्योग को बहुत नुकसान हुआ । भारत का हथकरघा व्यवसाय विश्व में सबसे पुराना और सबसे बड़ा है जो आज बदहाली की कगार पर है । भारतीय साड़ियों का ताजमहल कहा जाने वाला बनारसी साड़ी उद्योग जर्जर हो चुका है । झीनी झीनी चदरिया बिननेवाले कबीर के ये पेशागत-पाई को मोहताज़ ।-चिंदी हो गये हैं । चिथड़ों में जीते हुए पाई- भाई असल ज़िंदगी में चिंदी

गरीबी,बेरोजगारी,भुखमरी,कुपोषण और बढ़ते कर्ज़ के बोझ तले दबे हुए बुनकर समाज़ में आत्महत्याओं का दौर शुरू हो गया । वाराणसी, को दैनिक जागरण में ख़बर 2014 नवंबर 18 वर्षीय बुनकर राजू शर्मा ने 38 छपी कि सिगरा थाना क्षेत्र के सोनिया पोखरा इलाके में रहनेवाले आर्थिक तंगी से लाचार होकर फांसी लगा ली । खबरों के अनुसार लल्लापुरास्थित पावरलूम में काम करनेवाले राजू के पास बुनकर कार्ड एवं हेल्थ कार्ड भी थे जिनसे उसे कभी कोई लाभ नहीं मिला । यह समसामयिक घटना तमाम सरकारी योजनाओं के अस्तित्व पर ही सवालिया निशान लगाती हैं ।

बुनकर कर्म रूपी साधना तो कर रहा है लेकिन साधनों पर उसका अधिकार नहीं है । उसके और बाजार के बीच कई तरह के बिचौलिये और दलाल हैं । मालिक, दलाल,कमीशन एजेंट,कोठीदार,होलसेलर और खुरदरा व्यापारी इनके बीच बुनकर एक दम हाशिये पर है । बनारस के लगभग तीन चौथाई बुनकर ठेके या मजदूरी पर काम करते हैं । अनुमानतः 20% से भी कम बुनकर स्थायी कर्मचारी के रूप में कार्य करते हैं । बुनकरों को व्यापारी एक साड़ी के पीछे रूपये से अधिक नहीं देते । और ये पैसे भी साड़ी के बिकने के बाद ही दिये जाते 700 से 300 15 से 10 घंटे काम करने पर 10 हैं । यह एक साड़ी बनाने के लिए एक बुनकर को प्रतिदिन दिन लग जाते हैं । औरतों को बुनकरी का काम सीधे तौर पर नहीं दिया जाता लेकिन वे घर में रहते हुए साड़ी से जुड़े कई महीन काम करती हैं जिसके बदले उन्हें रूपये प्रति दिन 15 से 10 के हिसाब से मिल पाता है । ऐसे में इनकी हालत का सहज अंदाजा लगाया जा सकता है ।

कुछ दिनों पहले माननीय प्रधानमंत्री जी ने रेडियो पर नामक कार्यक्रम में “मन की बात” बताया कि खादी के प्रति उनकी अपील के बाद खादी की बिक्री कई गुना बढ़ी । मैं उनसे अनुरोध करता हूँ कि वे बनारसी साड़ियों को लेकर भी एक अपील देश और दुनियाँ से ज़रूर करें । आप सभी से भी विनम्र अनुरोध ह कि हो सके तो एक बनारसी साड़ी ज़रूर खरीदें ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

The Asian Human Rights Commission (AHRC) रिपोर्ट 2007

Government of India Ministry of Micro, Small & Medium Enterprises Brief Industrial Profile of Varanasi District (updated)

Fading Colours of a Glorious Past: A Discourse on the Socio-economic dimensions of marginalize Banarasi sari weaving community Satyendra N. Singh, Senior Research Fellow, Shailendra K. Singh, Junior Research Fellow Vipin C. Pandey, Senior Research Fellow, Ajay K. Giri, Research scholar)Department of Geography, Banaras Hindu University, Varanasi

Karnataka J. Agric. Sci., 22(2) :(408-411) 2009 Status of Banaras weavers: A profile* AMRITA SINGH AND SHAILAJA D. NAIK, Department of Textiles and Apparel Designing, College of Rural Home ScienceUniversity of Agricultural Sciences, Dharwad-005 580, Karnataka, India

Varanasi Weavers in Crisis :Rahul Kodkani UCSD Chapter

सोच विचार 3 काशी अंक -, जुलाई 2012

योजना -अक्टूबर 2014

दैनिक जागरण, वाराणसी -18, 19 नवंबर 2014